संपादक का नोट

मसीह यीशु में प्रियजनों, हमारे पुनर्जीवित प्रभु का आशीर्वाद आप सभी पर और आपके परिवार के साथ, आज और हमेशा के लिए हो।

प्रभु हमसे अनन्त प्रेम करते हैं। इसलिए, उनके अनन्त प्रेम के द्वारा उन्होंने आपको और मुझे छुड़ाया है। 1 पतरस 2:23 ''वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुःख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।'' पतरस का कहना है कि हालांकि यीशु ने क्रूस पर ले जाने के दौरान बहुत अपमान सहा था, उन्होंने यह कहकर लोगों के खिलाफ कोई शिकायत नहीं की, 'रुको और देखो जब मैं तीन दिनों के बाद फिर से जी उठूंगा, तो मैं तुम्हें दंड दूंगा।' नहीं, यीशु ने किसी भी प्रकार की धमकी नहीं दी थी। बल्कि वह अपने पिता से यह कहते हुए प्रार्थना करते रहे कि 'पिता उन्हें माफ कर दें, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।' यीशु ने पूरी ईमानदारी से बिना किसी बड़बड़ाहट के अपने जीवन का आत्मसमर्पण कर दिया, ताकि हम बच जाएँ और उनकी मृत्यु से धर्मी बन जाएँ।

हमारा प्रभु एक अच्छा प्रभु है। वह एक ऐसा प्रभु है जो हमें क्षमा करते है और हमें हर प्रकार के पाप से बचाते है। भजन संहिता 86: 5 ''क्योंकि हे प्रभु, तू भला और क्षमा करनेवाला है, और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभों के लिये तू अति करुणामय है।'' यीशु के इस दुनिया में आने से पहले ही यह भजन संहिता लिखा गया था और इस भजन संहिता में उनकी गुणवत्ता बहुत स्पष्ट रूप से वर्णित है। यह वही गुण है जो हम क्रूस पर देखते हैं जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था; एक अच्छा प्रभु जो दयालु था, यहां तक कि उनकी मृत्यु के समय तक उनका स्वाभाव वैसा ही था। यीशु ने क्रूस पर सब कुछ पूरा किया; अब हमें केवल यही करना है कि हमें उनके पास जाना है, हमारे पापों को स्वीकार करना है, और विनम्र मन से प्रभु की दया मांगनी है। तभी, हमारे अच्छे प्रभु हमारा स्वागत करेंगे और हमें खुले दिल से क्षमा करेंगे।

दुर्भाग्य से, उन समय के लोगों ने यीशु के इन गुणों को नहीं पहचाना, क्योंकि वे उन्हें बिल्कुल नहीं जानते थे। फैसले के लिए ऐसे परमेश्वर को पिलातुस के पास ले जाया गया था। मत्ती 27:19 ''जब वह न्याय की गद्दी पर बैठा हुआ था तो उसकी पत्नी ने उसे कहला भेजा, ''तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना, क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुःख उठाया है।'' पिलातुस की पत्नी ने पिलातुस से कहा 'उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना।' 'परमेश्वर पिलातुस के सपने में दिखाई दे सकते थे और उसे सीधे सूचित कर सकते थे, लेकिन परमेश्वर ने पिलातुस की पत्नी से बात करने का विकल्प चुना, और उसने बदले में पिलातुस को अपना सपना बताया। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि, 'पिलातुस ने बात सुनी।' हमारे जीवन में भी, कई बार प्रभु हमारे अधर्म को दिखाते है, हमें नहीं, बल्कि अपने चुने हुए लोगों को। उस समय, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम यह समझें कि यह सुधार प्रभु की ओर से आ रहा है, और हमें उनकी आवाज को मानना चाहिए और उनके अनुसार अपने तरीके सुधारना चाहिए।

मत्ती 5:17 ''"यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ।'' जी हाँ, परमेश्वर का पुत्र, यीशु, पवित्र शास्त्र में हर भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए अपने मानव रूप में आएं और उन्होंने हमारे रोग, बीमारी, बंधन और दर्द से जीत हासिल की है।

नीतिवचन 8:17 ''जो मुझ से प्रेम रखते हैं, उनसे मैं भी प्रेम रखती हूँ, और जो मुझ को यत्न से तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं।'' इसलिए, प्रभु के प्यारे बच्चों, न केवल जबानी तौर पर कहो कि आप प्रभु से प्यार करते हैं; लेकिन साबित करो अपने शब्दों, कार्यों और अपने कामों में कि आप प्रभु से प्यार करते हो। अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रभु से प्यार करो और उनसे दृढ़ बनके रहो, और उनकी वाणी का पालन करो।

आज, हमारे प्रभु ने हमें अनाथ नहीं छोड़ा है; बल्कि उन्होंने हमें उनकी पवित्र आत्मा दी है। हमारे पास यीशु मसीह में वह आशा और सच्चाई है जो उस वचन के माध्यम से है जो हमें हर बार आश्वस्त करता है कि वह समय के अंत तक हमेशा हमारे साथ रहेंगे।

यह ईस्टर एक ऐसा समय बन जाएं जिसमे हम पुरे दिल से प्रभु की खोज करे ताकि प्रभु की शांति और आनंद हमारे और हमारे परिवारों में से हर एक के साथ हो।

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

यीशु की ओर देखो और सुरक्षित रहो।

हमारे जीवन में, जब हमें प्रभु पर विश्वास होता है तो हमें अपना भविष्य देखने के लिए आत्मारिक दृष्टि से आशीष मिलेगा। जब हमारे पास आत्मारिक दृष्टि का उपहार होगा, तो हम अपने भविष्य को स्पष्ट रूप से देखने के लिए धन्य होंगे। इस प्रकार हम खुद को उसी के लिए तैयार कर सकते हैं। शुरू से, हमारे पूर्वज में भी वही आत्मारिक दृष्टि थी जैसा कि लिखा है इब्रानियों 11:2 ''क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई।'' वे अपने विश्वास के कारण प्रभु के लिए अच्छे साक्षी थे, उनके विश्वास के साथ आत्मारिक दृष्टि भी थी। इस प्रकार, हमारे पूर्वजों की अच्छी गवाही थी और हालांकि वे आज हमारे साथ नहीं हैं, फिर भी उनके साक्षी हमारे सामने हैं। यह केवल प्रभु में उनका विश्वास है, जो उन्हें एक अच्छा साक्षी बनाया है। अपने जीवन में भी, अपनी आत्मारिक दृष्टि से हमें विश्वास को देखना चाहिए, जब हमारा विश्वास मजबूत होगा तो हम अपनी आत्मारिक दृष्टि से कभी गलत नहीं हो सकते हैं। हम जानते हैं कि शुरुआत में, हव्वा को विश्वास नहीं था, उसे विश्वास नहीं था जो भी प्रभू ने उन्हें बताया था। उसने फल के ऊपर विश्वास किया और उसे खा लिया। लेकिन अगर उसे याद रहता कि कैसे प्रभु ने उन्हें ज्ञान के पेड़ के फल खाने के खिलाफ चेतावनी दी थी, अगर उसकी आत्मारिक आँखें होतीं, तो यह देख पाती कि उनके अवज्ञा करने पर उनका क्या होगा। लेकिन जब की उसका विश्वास ही मजबूत नहीं था, उसने मना किया हुआ फल खा लिया और इस तरह उन पर श्राप लगा। आइए हम पढ़ते है उत्पत्ति 2:16–19 ''16 और यहोवा परमेश्वर ने आदम' को यह आज्ञा दी, ''तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; 17 पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।'' 18 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, ''आदम' का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए।'' 19 और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम' के पास ले आया कि देखे कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम' ने रखा वही उसका नाम हो गया।'' उसकी अवज्ञा के कारण, विशेष रूप से सभी मानव जाति और महिलाओं पर अभिशाप आया। यहाँ हम देखते हैं कि प्रभु ने बहुत विश्वास रखा था कि आदम और हव्वा उनकी आज्ञा का पालन करेंगे, दुर्भाग्य से उन्हें प्रभु पर भरोसा नहीं था और इस तरह सजा को देखने के लिए आत्मारिक दृष्टि नहीं थी। उत्पत्ति 3: 16–19 ''16 फिर स्त्री से उसने कहा, ''मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।'' 17 और आदम से उसने कहा, "तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना, उसको तू ने खाया है इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा; 18 और वह तेरे लिये काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा; 19 और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है; तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।'' हमारे जीवन में भी, हमारे भीतर प्रभु का भय होना चाहिए। हमें पता होना चाहिए कि

यदि हम प्रभु को मानते हैं तो हम धन्य हो जाएंगे और यदि हम उनकी अवज्ञा करेंगे तो हमें दंडित किया जाएगा। यदि हम प्रभु में विश्वास नहीं करते हैं, तो हमारे लिए कोई लाभ नहीं है। यहाँ, इस मार्ग में हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि आदम और हव्वा ने प्रभु की आज्ञा और उन्हें दी गई चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया। मना किया हुआ फल खा लिया। इस प्रकार हमने यहां देखा है कि पूरी मानव जाति पर यह दंड कैसे आया। यहाँ हम देखते हैं कि यदि आदम और हव्वा की आत्मारिक आँखें होतीं, तो उन्हें प्रभु की आज्ञा पर भरोसा करने और उसे मानने का विश्वास होता।

इस प्रकार, मानव जाति पर इस अभिशाप को तोड़ने के लिए यीशु मसीह को इस दुनिया में भेजा गया था। आज, यीशु मसीह ने अपने लहू से मानव जाति को अभिशाप से छुटकारा दिया है। फिर भी, आइए हम जाँचें कि हमारी आत्मारिक आँखें और प्रभु में विश्वास कैसा है। अगर हमारे भीतर आत्मारिक आँखें और विश्वास है, तो हमारे बाद हमारा जीवन एक साक्षी बन जाएगा। दुनिया चाहे माने या न माने, लेकिन हमारे स्वर्गीय पिता निश्चित रूप से कहेंगे ''जिन लोगों ने मेरे पिता परमेश्वर से अपने आशीर्वाद का दावा किया है, उनके स्वर्गीय राज्य में प्रवेश करेंगे।'' हम कल्पना नहीं कर सकते कि इस दुनिया में हम एक महान गवाही को वापस छोड़ देंगे। हम एक और बाइबिल की कहानी को देखते हैं जो एसाव की है, उसके पास आत्मारिक आँखें और विश्वास नहीं था, इस प्रकार एक समय के भोजन के लिए उसने अपना पहिलौठे का अधिकार बेच दिया। भविष्य को देखने के लिए एसाव के पास आत्मारिक आँखें नहीं थीं, क्योंकि एक समय के भोजन को खाने के बाद उसे यह एहसास नहीं था कि उसके साथ क्या होगा। अगर वह परमेश्वर पर विश्वास करता और अपना भविष्य देखने के लिए आत्मारिक दृष्टि रखता, तो वह अपना पहिलौठे का अधिकार नहीं बेचता। आइए हम अब्राहम की कहानी भी देखें। वह भय से प्रभु में विश्वास करता था, उसे प्रभु पर बहुत भरोसा था। आइए हम पढ़ें इब्रानियों 11: 9–10 ''9 विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में, पराए देश में परदेशी के समान, रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया। 10 क्योंकि वह उस स्थिर नींववाले नगर की बाट जोहता था, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है।'' अब्राहम को प्रभु पर बहुत भरोसा था, इस प्रकार भविष्य को देखने के लिए उसके पास आत्मारिक आँखें थीं। इस प्रकार, आज अब्राहम को विश्वास के पिता के रूप में जाना जाता है। हम यीशु मसीह के जीवन को भी देखते हैं, एक तरफ वह क्रूस उठा रहा है और मानव जाति के लिए सभी बोझ उठा रहा है, जबकि दूसरी ओर उनकी आत्मारिक आँखें उसके पिता परमेश्वर के सिंहासन के दाईं ओर हैं। आइए पढ़ते हैं इब्रानियों 12: 2 ''और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा।'' यहाँ हम देखते हैं कि उन्होंने स्वर्ग के राज्य की महिमा के बारे में सोचकर अपने कष्टों को दूर नहीं किया। यीशु को अधिक बोझ उठाने के लिए तैयार किया गया था और बहुत अधिक कष्टों से गुजरने के लिए तैयार किया गया था, क्योंकि पिता परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठने की महिमा के बराबर कोई नहीं हो सकता। यह केवल विश्वास था और उनकी आत्मारिक आँखें विश्वास में स्वर्गीय राज्य की महिमा देख सकती थीं। जिस तरह प्रभु ने अदन की वाटिका में आदम और हव्वा से बात की थी कि उन्होंने आनंद लेने के लिए उनके लिए सारी चीजें बनाईं लेकिन उन्होंने एक आज्ञा भी दी यानी ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाना। इसी तरह यीशु मसीह ने हमसे भी बात की है कि वह हमारे लिए मकान तैयार करने के लिए अपने पिता के घर जा रहे है। वह वापस आनेवाले हैं ताकि हम इन मकानों में रह सके। हमारी आत्मारिक आँखों को यह विश्वास देखना चाहिए, कि यीशु अपने चुने हुए लोगों को लेने के लिए वापस आ रहे हैं। इस प्रकार, हमें प्रभु के लिए सभी पीड़ाओं, परीक्षणों और क्लेशों को सहन करना होगा। यूहन्ना 14: 1–4 ''1 ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। 2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ। 3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर

आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो। 4 जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।'' यीशु ने स्वर्गीय राज्य तक पहुँचने के लिए कौनसा मार्ग अपनाया? यह क्रूस पर एक पीड़ा थी, जो यीशु को पिता परमेश्वर के दाईं ओर ले गई। आइए फिर से पढ़े इब्रानियों 12: 2 ''और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा।'' हमें भी प्रभु के लिए कष्ट उठाना चाहिए, इस दुनिया में हमारे लिए कई परीक्षण और क्लेश होंगे, लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि यीशु ने यह सब जीत लिया है। जी हाँ, यीशु ने कहा है कि ''मैं कहाँ जाता हूँ तुम जानते हो, और तुम मार्ग भी जानते हो''। इस प्रकार, अब्राहम अपने बेटों के साथ इसहाक और याकूब अस्थिरवासी के रूप में रहते थे। इसके अलावा, हमारे पूर्वजों का जीवन हमारे लिए गवाही का जीवन था। हमारा जीवन भी उन सभी के साथ विश्वास में मजबूत होना चाहिए जो हम देखते हैं और जो हम पढ़ते हैं। विश्वास के बिना हम महिमायुक्त स्वर्गीय राज्य तक नहीं पहुँच सकते। हमारी आँखें भी हमेशा पृथ्वी से कई ऊपर की चीजों यानी स्वर्गीय राज्य पर केंद्रित होनी चाहिए। बाइबिल कहता है इब्रानियों 11: 35 ''स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को फिर जीवित पाया; कितने तो मार खाते खाते मर गए और छुटकारा न चाहा, इसलिये कि उत्तम पुनरुत्थान के भागी हों।'' महिलाओं को प्रभु के लिए पीड़ा सहने की इच्छा थी, ताकि वे स्वर्गीय राज्य में एक जगह अपने लिए सुनिश्चित कर सकें। उस महान मकान, महान स्वर्गीय सिंहासन को पाने के लिए, ये महिलाएं इस दुनिया के सभी बोझों को सहन करने के लिए तैयार थीं। वही प्रभु, आज भी कहते हैं ''मुझे देखो और इस दुनिया में मेरे दुखों को याद करो। आप कभी भी निराश या दुखित नहीं होंगे।''

यशायाह 45: 22 कहता है ''हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहनेवालो, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूँ और दूसरा कोई और नहीं है।'' यीशु कहते हैं ''यह केवल मेरे माध्यम से है कि तुम छुटकारा पाओगे, यह केवल मेरे माध्यम से है कि तुम को मुक्ति मिलेगी, यह केवल मेरे माध्यम से है कि तुम स्वर्गीय राज्य प्राप्त करोगे। यीशु ही मार्ग है, उन्होंने हमें स्वर्ग के राज्य तक पहुँचने का मार्ग दिखाया है। उनके बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते और उनके बिना हम स्वर्ग राज्य के मकानों तक नहीं पहुँच सकते। हमें अपने जीवन में परमेश्वर के इस महान कार्य को देखने के लिए विश्वास और आत्मारिक आँखें होनी चाहिए। इस प्रकार, दाऊद कहता है भजन संहिता 121: 1 में (यात्रा का गीत।) ''मैं अपनी आँखें पर्वतों की ओर लगाऊँगा। मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी?'' यीशु ने पहले ही कहा है ''तुम भले ही पृथ्वी में रहते हो, लेकिन अपनी आँखों को मुझ पर रहने दें, मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते हो या कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते हो।'' इस प्रकार, दाऊद कहता हैं, ''मैं अपनी आँखें पर्वतों की ओर लगाऊँगा। मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी? मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।'' इसलिए, हमारी प्रत्येक की आँखें और विश्वास प्रभु पर होना चाहिए, तभी हमारा जीवन इस दुनिया में एक साक्षी बन सकता है। अपने जीवन के हर पल में, हमें विश्वास में जीना चाहिए। यह अब हमारे लिए फसल का समय है, यह हमारे पूर्वजों ने बड़े विश्वास के साथ बीज बोया है। हम जानते हैं कि विश्वासियों ने कैसे दूर से आकर हममें विश्वास का बीज बोया है। विश्वास का बीज बोने के लिए थोमा धरती के इस छोर पर आया। जिस क्षण उसने हमारे देश में प्रवेश किया, उसका सामना एक बड़ी चुनौती से हुआ। यह हमारी भूमि में थोमा द्वारा बोया गया महान विश्वास है। आज, कटाई का समय है, आप और मैं फसल काटने वाले हैं। हम अपने प्रभु परमेश्वर की जितनी अधिक फसल करेंगे, वह हमसे खुश रहेंगे। इस प्रकार, प्रभु ने हमें जो भी प्रकार का काम दिया है, हमें इसे पूरी ईमानदारी से प्रभु के लिए करना चाहिए। विश्वासी का जीवन एक बहुत ही जिम्मेदार जीवन है, हमें हर काम प्रभु के लिए बड़े उत्साह और परिश्रम से करना चाहिए। यह एक छोटा काम हो सकता है या एक महान कार्य हो सकता है, हमारे हाथों के प्रत्येक कार्य में प्रभु का सम्मान होना चाहिए। जैसे की मिस्र की दाइयों का काम प्रसव के दौरान सहायता करना था, राजा का फरमान था कि मिस्र में जन्मे और 2 साल से कम उम्र के प्रत्येक लड़के को मार दिया जाना चाहिए। लेकिन, इन दाइयों

ने प्रभु का भय माना और अपना काम बड़ी जिम्मेदारी के साथ किया, उन्होंने राजा के फरमान का पालन नहीं किया बल्कि लड़के को बचा लिया। हमें अपनी सभी जिम्मेदारियों को बड़े परिश्रम से निभाना चाहिए। प्रभु हमें देख रहा है। 1 थिस्सलुनीकियों 2: 12 ''कि तुम्हारा चाल–चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।'' उनके राज्य की महिमा के लिए, हमें उनके लिए एक साफ बर्तन बनना होगा। परमेश्वर ने हमें स्वर्गीय महिमा के लिए बुलाया है, लेकिन दुष्ट शत्रु हमें इस संसार की खुशियाँ दिखाता है और हमें इन छोटे–छोटे लाभों से लुभाता है।

अब्राहम के जीवन पर विचार करें, वह उस स्वर्गीय राज्य में विश्वास करता था, अपने एकलौते पुत्र को परमेश्वर के आदेश पर बलिदान करने के लिए तैयार था। इस प्रकार, अब्राहम प्रभु का मित्र बन गया। हम नूह के जीवन को भी देखते हैं, अपने समय में वह प्रभु के सबसे अधिक कृपापात्र था। वह एक नेक इंसान था। हम यह भी देखते हैं कि हनोक एक धर्मी व्यक्ति था जो प्रभु का भय मानता था। ये सभी लोग प्रभु के लिए एक आत्मारिक पात्र बन गए, इस प्रकार उनका जीवन आज भी एक साक्षी है। प्रभु ने आपको और मुझे एक ही बुलावा दिया है, यीशु ने हमें बताया है कि वह आपके और मेरे लिए एक मकान तैयार करने जा रहे है, हमारे लिए स्वर्गीय राज्य तैयार करने के लिए। उन्होंने हमसे वादा किया कि वह अपने चुने हुए लोगों को लेने के लिए वापस आएंगे। इस प्रकार, हम प्रभु के लिए जो कुछ भी करते हैं, उसमें हमें परिपूर्ण होना चाहिए। 1 कुरिन्थियों 1: 17 ''क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, वरन् सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।'' प्रेरित पौलुस ने पूरी लगन से प्रभु के लिए काम किया, वह उनकी पुकार के प्रति सच्चा था, उसने प्रभु का भय माना और प्रभु के लिए उत्तमता से काम किया। इस प्रकार पौलुस प्रभु के लिए एक पात्र बन गया और स्वर्गीय राज्य में एक स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार, हमें भी प्रभु के लिए समृद्ध फसल करना चाहिए, विश्वासियों ने हमारे लिए विश्वास के बीज बोए हैं, हमें अब उसी की फसल काटनी है। यह आप और मैं हैं जिन्हें अभी काम पूरा करना है, हमें अपने पूर्वजों के कामों के फल काटने होंगे। यूहन्ना 4: 35 कहता है कि ''क्या तुम नहीं कहते, 'कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं?' देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं।'' यूहन्ना कहता हैं कि अपनी आँखें खोलो और कटाई के लिए तैयार हो जाओ। ऐसा कोई काम नहीं है जो हम प्रभु के लिए नहीं कर सकते हैं, हम में से प्रत्येक भय शत्रु द्वारा लाया जाता है, इसलिए हमें शत्रु द्वारा लाए गए डर को दूर करना सीखना चाहिए। हमें अपने दिमाग को आजाद नहीं रखना चाहिए, जिस पल यह मुक्त होता है शत्रु इस दुनिया की चीजों से भरेगा, इसलिए हमें अपने जीवन में प्रवेश करने के लिए शत्रु को कोई स्थान नहीं देना चाहिए। हमें शत्रु से नहीं डरना चाहिए। अय्यूब की तरह, जिसे डर था कि उसके परिवार ने लगातार प्रभु के खिलाफ पाप किया है, वह हर दिन प्रभु के लिए क्षमा मांगते हुए, प्रभु के पास जाता था और बलिदान करता था। लेकिन अंत में, अय्यूब को जो डर था वह हो गया, उसने अपने पुरे परिवार को खो दिया, लेकिन प्रभु की दृष्टि में यह कुछ भी नहीं था। जितना अधिक हम प्रभु का भय मानेंगे, उतना ही शत्रु हमसे दूर हो जाएगा।

भजन संहिता 126: 5–6 ''5 जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएँगे। 6 चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।'' परीक्षणों के बिना हम उन चुनौतियों में जीत हासिल नहीं कर सकते हैं। जब हम एक महीने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं तो हमें महीने के अंत में पगार मिलती है। हम उस धन का पीछा करते हैं जो हमारे साथ हमेशा नहीं रहता है। इस प्रकार, हमें आनंद में रहने के लिए, हमें विश्वास में बोना होगा। हमें निरंतर प्रभु पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जब हम प्रभु की तलाश करेंगे, तो वह हमारे जीवन, धन, सम्पति आदि में अपना सब कुछ जोड़ देगा। यशायाह 65: 24 ''उनके पुकारने से पहले ही मैं उनको उत्तर दूँगा, और उनके माँगते ही मैं उनकी सुन लूँगा।'' जब हमारी दृष्टि, हमारा विश्वास प्रभु पर बना रहता है, तो वह

हमारे पुकारने से पहले ही उत्तर दे देंगे। हमारे पूछने से पहले ही सब कुछ हमें दिया जाएगा। हमारे पूर्वजों की तरह जो विश्वासी थे, वे महान साक्षी बने, जैसे थोमा जो दुनिया के इस सबसे दूर छोर पर आया और हमारे लिए विश्वास के बीज बोए। लेकिन जब हम अपनी बुद्धि और ज्ञान के साथ सब कुछ करने की कोशिश करते हैं, तो हमारे जीवन में कुछ भी पूरा नहीं हो सकता है। हमारा प्रभु न सोयेगा, न ही ऊंघेगा, वह हमेशा हम पर नजर रखता है लूका 21: 28 ''जब ये बातें होने लगें, तो सीधे होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।'' यह समय हमारे सिर को ऊपर उठाने का है, सब कुछ खत्म होने के बाद नहीं, लेकिन पहले से ही हमें अपने सिर को ऊपर उठाना होगा। हम में से कोई भी न तो उनके आने का समय जानता है, न ही वक्त, बल्कि हमें उन प्रमाणों पर विश्वास करना चाहिए जो हमने सुने हैं और अपनी आत्मारिक आँखें खोलनी चाहिए और प्रभु में विश्वास रखना चाहिए। हम रिबका की कहानी जानते हैं, कि उसने अपने माता–पिता के घर को कैसे छोड़ा और उसने अपने दूल्हे इसहाक के लिए अपनी दृष्टि कैसे उठाई। आज, हमारा दूल्हा यीशु मसीह है, इस प्रकार हमारी दृष्टि उन्ही के लिए उठनी चाहिए। उत्पत्ति 24: 22– 26 ''22 जब ऊँट पी चुके, तब उस पुरुष ने आधा तोला सोने का एक नथ निकालकर उसको दिया, और दस तोले सोने के कंगन उसके हाथों में पहिना दिए; 23 और पूछा, "तू किसकी बेटी है, यह मुझ को बता। क्या तेरे पिता के घर में हमारे टिकने के लिये स्थान है?" 24 उसने उत्तर दिया, "मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूँ।" 25 फिर उसने उससे कहा, "हमारे यहाँ पुआल और चारा बहुत है, और टिकने के लिये स्थान भी है।" 26 तब उस पुरुष ने सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत् करके कहा, ''जिस तरह अब्राहम अपने बेटे इसहाक को चाहता था, इसलिए प्रभु ने उसे सुना और उसके बेटे इसहाक के लिए रिबका में एक दुल्हन प्रदान की। हम प्रभु परमेश्वर के बिना कुछ नहीं कर सकते। उनके बिना हम जो कुछ भी करते हैं वह हमारे जीवन में शापित है। हम यह सब व्यर्थ काम करते हैं, क्योंकि हम प्रभु से डरते नहीं हैं। प्रभु के पास हमेशा हमारे लिए सबसे अच्छा विकल्प होता है, इस प्रकार वह कहते हैं ''मुझे देखो और मैं प्रदान करूंगा''। 2 पतरस 1: 19 ''हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे।'' हमें परमेश्वर के वचन को याद रखना चाहिए जब हम शत्रु द्वारा परीक्षा में पड़ते हैं। यीशु मसीह ही मार्ग, सत्य और जीवन है। यशायाह 40: 26 ''अपनी आँखें ऊपर उठाकर देखो, किसने इनको सिरजा? वह इन गणों को गिन गिनकर निकालता, उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बली है कि उनमें से कोई बिना आए नहीं रहता।'' यहोवा परमेश्वर ने अब्राहम को तम्बू से बाहर ले जाकर उससे कहा, ''अपनी आंखों को ऊंचा उठाओ, और देखो, जिन्होंने इन चीजों को बनाया है, क्या तू उनको गिन सकता है?'' आइए हम पढ़े उत्पत्ति 15: 5 ''और उसने उसको बाहर ले जा के कहा, "आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है?" फिर उसने उससे कहा, "तेरा वंश ऐसा ही होगा।'' हम भी प्रभु के बिना कुछ भी नहीं कर सकते हैं। आइए हम फिर से पढ़ें यशायाह 40: 26 ''अपनी आँखें ऊपर उठाकर देखो, किसने इनको सिरजा? वह इन गणों को गिन गिनकर निकालता, उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बली है कि उनमें से कोई बिना आए नहीं रहता।'' आप और मैं प्रभु की दृष्टि में तारागण हैं। धर्मी प्रभु के लिए सितारों के रूप में चमकते हैं। इब्रानियों 11: 16 कहता है ''पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं; इसी लिये परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिये एक नगर तैयार किया है।'' हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि यीशु किसके लिए प्रभु के स्वर्गीय राज्य में मकान तैयार कर रहे है। प्रभु किसी के लिए भी पक्षपात नहीं करते है, चाहे हम कोई भी हों, यदि हम प्रभु के लिए केंद्रित हैं तो वह हमारे जीवन में काम करेंगे। हम प्रभु के दृष्टी में क्या हैं? हमारे लिए उनका वादा क्या है? आइए हम पढ़ें जकर्याह 2: 8 ''क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, उस तेज के प्रगट होने के बाद उसने मुझे उन जातियों के पास

भेजा है जो तुम्हें लूटती थीं, क्योंकि जो तुम को छूता है, वह मेरी आँख की पुतली ही को छूता है।'' हम उनकी आँखों की पुतली हैं''। कोई हमें छू नहीं सकता। हमें लगता है कि वह हमें नहीं देखते है, न ही वह जानते है कि हम क्या कर रहे हैं। व्यवस्थाविवरण 32: 10 ''उसने उसको जंगल में, और सुनसान और गरजनेवालों से भरी हुई मरुभूमि में पाया; उसने उसके चारों ओर रहकर उसकी रक्षा की, और अपनी आँख की पुतली के समान उसकी सुधि रखी।'' हमारे प्रभु हमसे बहुत प्यार करते है, लेकिन यह हमारा विश्वास है जो कि उनपर निर्बल है और हमारे पास अपने भविष्य को देखने के लिए आत्मारिक आँखें नहीं हैं जो प्रभु ने हमारे लिए योजना बनाई हैं। आइए हम पढ़ें यशायाह 49: 15 ''क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपीते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हाँ, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता।'' हमारे माता–पिता हमारे पापों को छिपा सकते हैं, लेकिन प्रभु कभी नहीं छिपाएंगे लेकिन जब हम स्वीकार करेंगे तब वह हमें क्षमा करने के लिए तैयार है और वह हमें छुटकारा भी देंगे। हम सब प्रभु परमेश्वर के सामने छोटे बच्चे हैं। हमारा परमेश्वर हम से अपने वचन के माध्यम से बात करते है, वह हमें सुधरेंगे और तब तक हमें काटेंगे जब तक कि हमारा पापी लहू नहीं बह जाता। हमें प्रभु में वह विश्वास और भय होना चाहिए, केवल यही हमें शुद्ध करेगा और आत्मारिक आंखों से देखने में हमारी मदद करेगा और इस तरह हमारा भविष्य देखने में मदद करेगा जो कि प्रभु ने हमारे लिए योजना बनाई है।

प्रभु इस वचन को आशीष दे! प्रभु की स्तुति हो!

पास्टर सरोजा म।